पायोजी मैंने राम–रतन .....

पायोजी मैंने राम–रतन–धन पायो ।। टेर ।।
वस्तु अमोलक दी मेरे सतगुरु, किरपा कर अपनायो ।
पायोजी मैंने राम–रतन–धन पायो ।।
जनम–जनम की पूंजी पाई, जग में सभी खोवायो ।
पायोजी मैंने राम–रतन–धन पायो ।।
खरचे न खूटे, चोर ना लूटे, दिन–दिन बढ़त सवायो ।
पायोजी मैंने राम–रतन–धन पायो ।।
सत् की नाव खेवटिया सत्गुरु, भवसागर तर आयो ।
पायोजी मैंने राम–रतन–धन पायो ।।
मीराँ के प्रभु गिरधर नागर, हरख–हरख जस गायो ।
पायोजी मैंने राम–रतन–धन पायो ।।

पिंजरे के पंछी रे ....

पिंजरे के पंछी रे, तेरा दर्द न जाने कोई, तेरा दर्द न जाने कोय
बाहर से तो खामोश रहे तू, भीतर–भीतर रोये रे –2
हे ! भीतर–भीतर रोये, तेरा दर्द न जाने कोय – 2
कह ना सके तू अपनी कहानी, तेरी भी पंछी क्या ज़िन्दगानी रे
विधि ने तेरी कथा लिखी है, आँसू में कलम डुबोय
तेरा दर्द न जाने कोई, तेरा दर्द न जाने कोय
चुपके–चुपके रोने वाले, रखना छिपाके दिल के छाले रे – 2
ये पत्थर का देश है पगले, कोई न तेरा होय
तेरा दर्द न जाने कोई, तेरा दर्द न जाने कोय
पिंजरे के पंछी रे, तेरा दर्द न जाने कोई, तेरा दर्द न जाने कोय